PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रेमचंद के कथा साहित्य में मनोविज्ञान का उत्कृष्ट निदर्शनः मुख्यतः ईदगाह, गुल्ली डंडा और सच्चाई का उपहार के परिप्रेक्ष्य में।

• श्रेया भारती • अर्चना कुमारी • उषा कुमारी
• मंजुला सुशीला

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Manjula Sushila

Abstract : 'मनोविज्ञान', एक ऐसा शब्द जो अपने-आप में रहस्यमय है। कारण, हर व्यक्ति विशेष की अपनी सोच, अपनी विचारधारा होती है। परिणामतः एक ही प्रकार की परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग सोच रखता है। वैसे में यदि बाल मनोविज्ञान की चर्चा की जाए, तो यह विषय न सिर्फ आकर्षक और मनोरंजक प्रतीत होता है, बल्कि हृदय-स्पर्शी भी है। हर बालक का मन एक पहेली के समान है और इस पहेली को समझने का प्रयास साहित्य जगत् के महान कथाकार प्रेमचंद ने बहुत ही बारीकी से किया है। उनकी कुछ बालोपयोगी कहानियाँ तो इतनी महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय हैं, कि उनकी चर्चा-मात्र से ही हम एक बालक के मन से रूबरू हो उठते हैं। यह बालमन न सिर्फ स्वयं को अभिव्यक्त करता है, बल्कि पूरे समाज के सम्मुख एक आदर्श भी स्थापित कर जाता है। प्रेमचंद द्वारा लिखी कहानी 'ईदगाह' और उसके मुख्य पात्र 'हामिद' ने हमें प्रेरित किया कि हम अपने शोधा-पत्र के विषय के रूप में कुछ ऐसी कहानियों का चयन करें, जिनमें बालमन को अभिव्यक्ति मिली है और समाज के मध्य एक सकारात्मक संदेश भी पहुँचा है। मानव-मन के पारखी रचनाकार प्रेमचंद की तीनों कहानियाँः ईदगाह, गुल्ली डंडा और सच्चाई का उपहार, हर प्रकार से बालकों की सोच और उनके मनोभावों को प्रकट करने में पूर्णतः समर्थ हैं।

संकेत शब्द : विचारधाारा, हृदय-स्पर्शी, बालोपयोगी, अभिव्यक्ति, सकारात्मक, मनोभावों।

श्रेया भारती
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अर्चना कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

उषा कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

मंजुला सुशीला
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : manjula71pwc@gmail.com

भूमिका :

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परम्परा का विकास किया, जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्ग-दर्शन किया। इन्होंने ही साहित्य की यथार्थवादी परम्परा की नींव रखी। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है, जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा ही रहेगा। प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के पितामह माने जाते हैं। प्रेमचंद का यह मानना था कि ''साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।'' उन्होंने इस सच्चाई को अपने साहित्य के माध्यम से स्थापित किया। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु जो यश और प्रतिष्ठा उन्हें कहानी और

उपन्यास लेखन से प्राप्त हुई, वह अन्य विधाओं से प्राप्त नहीं हो सकी।

प्रेमचंद ने मुख्य रूप से ग्रामीण एवं मध्य वर्गीय जीवन पर कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचंद ने इसी क्रम में न सिर्फ मानव-मन को परखा है, बल्कि बालमन को भी टटोलने का प्रयास किया है। बाल मनोविज्ञान से लेकर वयस्क समाज का हाले बयाँ करने वाले प्रेमचंद की रचनाओं में इतना वैविध्य है कि आज भी उसका कोई सानी नहीं है। हमने अपने इस शोध कार्य में बाल मनोविज्ञान के आधार पर प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियों का मूल्यांकन किया है। बाल मनोविज्ञान अर्थात बालक या बच्चों के मन को समझने वाला विज्ञान। एक इंसान किस प्रकार भावनाओं में बंधकर हँसता, रोता और गाता है, निज संघर्ष में हारता जीतता है, ऐसे ही प्रश्नों का अध्ययन मनोविज्ञान करता है। मनोविज्ञान के अध्ययन के कई साधान हैं, जैसे- अंत: निरीक्षण विधि, प्रेक्षण विधि प्रयोगात्मक विधि, व्यक्ति इतिहास विधि, सर्वेक्षण विधि, क्षेत्र अध्ययन आदि। इन्हीं विधियों के अंतर्गत बाल मनोविज्ञान का भी अध्ययन किया जाता है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में बाल मनोविज्ञान को दर्शाने के लिए 'प्रेक्षण विधि' की मदद ली है। उन्होंने बालक को समझने का महती प्रयास किया है, जो हमें संदेश देता है कि बालकों का हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि वे समाज के सर्जक हैं, और उनके समुचित विकास पर ही समाज का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है। परिवार बालकों की प्राथमिक पाठशाला है, अत: परिवार का दायित्व है, कि बच्चों का भरण-पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा उचित रूप से हो। प्रेमचंद ने अपनी बालोपयोगी कहानियों में न सिर्फ बालकों के प्रति अपनी सोच बल्कि बालकों की अपनी सोच को दर्शाने का उत्कृष्ट कार्य किया है। प्रेमचंद ने बच्चों के प्रति अपने विचारों को प्रकट करते हुए लिखा है- ''बालक को प्रधानत: ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, कि वह जीवन में अपनी रक्षा आप कर सकें। बालकों में इतना विवेक होना चाहिए कि वे हर एक काम के गुण-दोष को भीतर से देखें।'' प्रेमचंद बच्चों को अनुशासित एवं संयमित देखना चाहते थे।

देखा जाये तो बाल साहित्य कोई नया विषय नहीं है। सदियों से इसका अस्तित्व मौखिक रूप में रहा है। प्रारम्भ में दादा-दादी, नाना-नानी तरह-तरह की कहानियाँ सुनाया करते थे। बाल-साहित्य का जन्म उसी की कोख से हुआ है। पंचतंत्र, हितोपदेश, और जातक कथाएँ इसी के अंतर्गत आती हैं। लिखित परम्परा में अमीर खुसरों से इसकी शुरूआत मानी जा सकती है।

मध्यकाल में सूर और तुलसी ने बाल-साहित्य को व्यापक रूप प्रदान किया। इन दोनों ही कवियों ने अपनी रचनाओं से यह प्रकट किया कि बालकों के लिए न कोई राजा होता है, और न कोई प्रजा। बड़ी से बड़ी बादशाहत भी बालकों की तोतली बोली और निश्छल आचरण-व्यवहार पर नत्मस्तक हो जाती है।

अपने इन्हीं विचारों को आधार बनाकर प्रेमचंद ने बाल-शिक्षाप्रद कहानियों की रचना की, जिनमें 'ईदगाह', 'गुल्ली डंडा' एवं 'सच्चाई का उपहार' अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। हम इन तीनों कहानियों के अनुशीलन से जान सकेंगे कि प्रेमचंद ने किस कोमलता और मार्मिकता के साथ बालकों के निष्कलुष, निष्पाप और कोमल हृदय का उद्घाटन किया है।

उद्देश्य :

(क) सामान्य-प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचंद की तीन प्रमुख बाल कथाओं के माध्यम से प्रेमचंद की बच्चों के प्रति सोच एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करना।

(ख) विशिष्ट- 1. प्रेमचंद की तीनों लोकप्रिय कहानियों, 'ईदगाह', 'गुल्ली डंडा' और 'सच्चाई का उपहार' को पाठकों के समक्ष लाना, उसका विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन एवं मुख्य पात्रों से परिचय प्राप्त करते हुए, उनके विशिष्ट गुणों को उभारकर उनके बालमन को टटोलना।

2. इन तीनों कथाओं के प्रमुख पात्रों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए आज के विघटनकारी परिवेश से जूझते युवा वर्ग को सकारात्मक संदेश देना ही हमारे शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति :

इस शोधकार्य के लिए निम्नलिखित पद्धति को अपनाया गया है:

1. वर्णनात्मक
2. विश्लेषणात्मक
3. समीक्षात्मक या तुलनात्मक

तथ्यों के संग्रह के लिए हमने अध्येय रचनाओं पर किए गए पूर्व शोध ग्रंथों, संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं इन्टरनेट की मदद ली है।

प्रस्तावना :

1. इस शोधकार्य के उपरांत लोग बालकों के मन को समझने का प्रयास करेंगे।
2. बच्चे देश के कर्णधार हैं, राष्ट्र निर्माता हैं, उनके भविष्य को सँवारने की दिशा में कदम उठेंगे।
3. और अधिक बाल साहित्य का सृजन कर बालकों के भविष्य को उज्जवल बनाने की दिशा में सकारात्मक कार्य होने की सँभावना है।
4. गरीबी और अभाव में जीवन बसर करने वाले बालकों में भी संयम, सहनशीलता, सहयोग, परोपकार एवं उच्च संस्कार को देख, समाज की कुंठित एवं संकुचित मानसिकता में बदलाव आ सकता है।

ईदगाह : तुलनात्मक अध्ययन

'ईदगाह' प्रेमचंद की बालमनोविज्ञान संबंधी उत्कृष्ट रचना है। इसमें मानवीय संवेदना और जीवनगत मूल्यों को तथ्यों से जोड़ा गया है। एक 4 वर्ष के नन्हें से बालक हामिद द्वारा, प्रेमचंद ने जिन जीवन मूल्यों को उद्घाटित किया है, वह अपने-आप में लेखक की आदर्श सोच एवं धारणा को दर्शाता है। हामिद इस कथा का नायक है, जो अत्यंत जागरूक व्यक्तित्व का स्वामी है। एक ओर तो वह अन्य बालकों की तरह अत्यंत भोला और सरल है, वहीं दूसरी ओर उसकी बुद्धि की परिपक्वता विलक्षण हैं। ईद के मेले में वह अपने साथियों की तरह न तो मिठाई खाता है, न ही अपने लिए कोई खिलौना खरीदता है। वह अपनी बूढ़ी दादी के लिए चिमटा खरीदता है, जिससे रोटी सेंकते हुए दादी के हाथ न जले। नन्हीं जान की बढ़ी सोच अभावों में जीने वाली दादी को पूर्ण तृप्ति और जिस सुख से भर देती है, वह कहानी का सर्वोच्च मार्मिक बिन्दु है। आज के इस भौतिकवादी-स्वार्थी जीवन में जहाँ लोग अपनों को मान-सम्मान, प्रेम-स्नेह नहीं देते, वहाँ अपनी दादी के लिए ऐसी सकारात्मक सोच एवं उसका कर्म, न सिर्फ उसे (हामिद) विशिष्ट बनाता है, बल्कि वह हमारे समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करता है, और हमारी चेतना को झकझोरता है।

कुछ ऐसी ही भावनाओं से भरा पात्र, सियारामशरण गुप्त रचित कहानी 'काकी' का श्यामू है, जो अपनी काकी से अपार स्नेह-प्रेम करता था। उनकी मृत्यु के उपरांत भी अपनी काकी को वापस लाने के लिए किया गया व्यवहार, उसके बाल मन को सहज अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

अपनी काकी की मृत्यु के उपरांत श्यामू का शोक शांत न हो सका। लोगों द्वारा झूठी तसल्ली देने पर भी श्यामू काकी के लिए बेचैन रहता है। ऐसे में आकाश में उड़ती पतंग को देखकर वह अपने काका से पतंग दिलाने की जिद करता है। काका के आश्वासन के उपरांत वह उनकी जेब से चवन्नी चुराकर एक पतंग और डोर खरीदने की बात अपने समवयस्क मित्र भोला (सुखिया दासी का लड़का) से कहता है। श्यामू का यह कहना कि पंतग पर काकी का नाम लिखकर वह रामजी के पास भेजेगा और पतंग की डोर पकड़कर काकी नीचे उसके पास आ जाएँगी। यह प्रसंग बाल मनोविज्ञान के मार्मिक रूप को दर्शता है।

मित्र द्वारा पुनः यह कहे जाने पर कि पतली डोर से उतरने पर डोर के टूटने का डर है, तो श्यामू पुनः काका की जेब से एक रूपया चुराता है और मोटी-मोटी दो रस्सियाँ खरीदने को कहता है। भोला से यह कहना- ''जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा रखूँगा। नाम की चिट रहेगी, तो पंतग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जायेगी।''

यह व्यवहार श्यामू के बालमन को सहज अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

<u>गुल्ली डंडा</u> : क्रीड़ामय बाल्य जीवन की उत्कृष्ट कथा

यह कथा बाल-जीवन को दर्शाने वाली प्रेमचन्द की उन कथाओं में से एक है, जहाँ प्रेमचंद ने खुलेमन के साथ बच्चों की निश्छल, निष्कपट और निष्पाप मित्रता पर प्रकाश डाला है। दो मित्रों के बीच की ऐसी मित्रता जो जाति-पाँति, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के भेद-भाव से परे है। गुल्ली डंडा के खेल में ऊँची जाति के बालक का कमजोर होना और निम्न वर्ग के मित्र का निपुण होना, तथा खेल के क्रम में बड़े और सम्भ्रांत परिवार के लड़के को बार-बार हराने के एवज में दंड मिलना, फिर भी उस मित्र का सबकुछ बर्दाश्त करते हुए खेल में मग्न रहना, इस कहानी में एक साथ कई स्तरों पर मानवीय संवेदनाओं को प्रभावित करने वाली स्थितियों का उद्घाटन करता है।

प्रेमचंद ने इस कथा में- **'मनुष्य-मनुष्य के बीच होने वाली कृत्रिम दूरी को केन्द्रीय विचार बिंदु के रूप में रखा है। मानव-मात्र समान है, उसकी भावनाएँ तथा आवश्यकताएँ भी समान हैं। खेल में जात-पात, ऊँच-नीच का विचार छोड़, समान भाव से खेला जाता है। कुछ परिवारों में भले ही**

माता-पिता अपने बच्चों को निर्धन या अपने से निम्न कुल के बालकों के साथ खेलने से अभिमानवश रोकते हैं, पर बच्चे स्वयं इस अंतर को नहीं देखते, यदि बार-बार उनके धयान में यह बात न लायी जाये।' - (गुल्ली डंडा, 98)

इस कथा में प्रेमचंद ने पात्रों के चरित्र-चित्रण में मनोविज्ञान का पूर्णत: उपयोग किया है। खेल के मोह में अपने खाने-पीने की वस्तु की साझा करना और फिर थोड़े से झगड़े के बाद उस वस्तु को वापस माँगना, बाल मनोविज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है। बचपन की शरारत और व्यवहार न सिर्फ मन को गुदगुदाते हैं, बल्कि कथाक्रम में हँसने को बाध्य कर देते हैं।

कथा के उतरार्द्ध में 20 साल बाद की चर्चा है, जब बचपन के दो मित्र परिपक्व हो गए हैं। उनकी सोच और विचारों में आए बदलाव के कारण मित्रवत् व्यवहार में आनेवाले बदलाव को प्रेमचंद ने बखूबी दर्शाया है। बचपन में गया से दंड पाने वाला मित्र अब इंजीनियर है और गया डिप्टी साहब का साईस। दोनों की स्थिति में जमीन-आसमान का फर्क है, जिसे दोनों ही महसूस करते हैं। बचपन में जाति-पाँति, अमीर-गरीब के फर्क से ऊपर उठकर जो मित्रता हुआ करती थी, आज बड़े होने के बाद दोनों ही अपनी स्थिति के प्रति सजग है। अब गया और उसके मित्र के मध्य अफसरी दीवार बन गई थी। गया अपने मित्र का लिहाज कर रहा था, अदब कर रहा था किन्तु उसके साहचर्य का अनुभव नहीं कर सकता था। लड़कपन में अपने मित्र को अपना समकक्ष जानकर उससे लड़ना-झगड़ना, गुल्ली-डंडा के खेल में सुबह से शाम तक 'पदाना' और अपनी पारी लेकर ही मित्र को घर जाने देना, यह बाल मनोविज्ञान का उत्कृष्ट परिचय है, किन्तु 20 वर्ष उपरांत अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के प्रति सजग दोनों ही मित्रों के व्यवहार में बदलाव दिखाकर प्रेमचंद ने यथार्थ जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि बचपन में हमेशा जीतने वाला गया, बड़ा और परिपक्व होकर अपने मित्र की धाँधली के सम्मुख भी सिर झुका लेता है।

ऐसी ही बालमन को अभिव्यक्त करने वाली और मित्रता के चरम् को दर्शाने वाली कहानी मार्कण्डेय द्वारा लिखी गई कहानी 'पान-फूल' है। जिसमें दो छोटी बच्चियों और एक कुतिया की कहानी है, कि किस प्रकार एक-दूसरे के प्रति जुड़ाव, लगाव और आत्मीयता के कारण वे तीनों मौत के मुँह में छलांग लगा देती हैं। यह कहानी भी बाल-मनोविज्ञान को चित्रित करने वाली सफल कहानी है।

कथा एवं शिल्प की दृष्टि से: सच्चाई का उपहार

'सच्चाई का उपहार' प्रेमचंद की उत्कृष्ट कहानियों में से एक है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने एक विद्यार्थी बालक के आदर्श गुणों के साथ उसकी सच्चाई को भी दर्शाया है। इस कथा का मुख्य पात्र बाजबहादुर निर्धन परिवार का, गम्भीर, ईमानदार और शांत प्रवृत्ति का लड़का है। उसकी अच्छाई उस मदरसे के अमीर छात्रों को नहीं भाती थी। परिणामत: वे उसे न सिर्फ परेशान करते बल्कि कभी-कभी उसकी पिटाई भी कर देते थे। बाजबहादुर उन लड़कों के प्रति कभी भी अपना नकारात्मक व्यवहार प्रकट नहीं करता। एक बार की घटनानुसार उसने उन शरारती छात्रों को कुछ गलत करते देखकर भी उनकी शिकायत गुरूजी से नहीं की, जिसके डर से वे विद्यार्थी मदरसा नहीं आते थे। ऐसे में बाजबहादुर स्वयं उनके पास जाकर उनसे मदरसा आने का आग्रह करता है। उसकी इस ईमानदारी, सच्चाई और अच्छे व्यवहार से न सिर्फ वो शरारती बच्चे, बल्कि मदरसे के अन्य बच्चे भी उसकी सराहना करते हुए उसके मित्र बन गए। इस प्रकार प्रेमचंद ने एक विद्यार्थी बालक के चरित्र में, सच्चाई और ईमानदारी के साथ-साथ, मानवता, न्याय-दृष्टि, नैतिकता आदि गुणों का समावेश कर, छात्रों को आदर्श जीवन के प्रति अपनी चेतना जगाने के लिए प्रेरित किया है।

कुछ ऐसा ही स्वरूप प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी पंच-परमेश्वर में दिखाई देता है, जहाँ बचपन के दो अभिन्न मित्र अपनी मित्रता को निभाने के साथ-साथ अपने जीवन के आदर्शों का भी पालन करते हैं, और न्याय-अन्याय, समझदारी, ईमानदारी आदि सद्गुणों का दामन नहीं छोड़ते।

जिस प्रकार परिपक्व अवस्था में 'पंच-परमेश्वर' के जुम्मन और अलगू चौधरी ने अपनी मित्रता को बनाए रखा, उसी प्रकार बालक बाजबहादुर ने अपनी सरलता और निष्कपटता द्वारा अपने दुश्मन बने मित्रों को भी अपना बना लिया।

यही तो है 'बाल मनोविज्ञान'। ये कहानियाँ एक बालक के निर्मल मन और सरल, सहज निष्कपट आचरण को व्यक्त करती है। उनकी सहज प्रवृत्ति सकारात्मक होती है, परिस्थितियाँ उनमें नकारात्मक सोच-पैदा करती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

प्रस्तुत परियोजना कार्य के अंतर्गत हमने भारतीय साहित्य जगत के महान कथाकार प्रेमचंद और उनकी बाल मनोविज्ञान सम्बंधी कहानियों और पात्रों के चरित्र को दर्शाया है। प्रेमचंद की

अलग-अलग कहानियों द्वारा यह भी दर्शाने का प्रयास किया है, कि एक बालमन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलु विद्यमान रहते हैं। जहाँ तक प्रेमचंद की कहानियों का प्रश्न है, उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण परिवेश से जुड़ी हैं, और उनके पात्र गरीबी से संघर्ष करते दिखते हैं।

बच्चे हमारी अमूल्य संपत्ति हैं, यह लुट जाएगी यदि इसे संस्कार नहीं दिए जायेंगे। बाल्यावस्था के नाजुक समय में यदि सही मार्गदर्शन व अच्छे संस्कार बच्चों को दिए जायें, तो वे जीवन में अवश्य सफल नागरिक बनेंगे।

आज के भौतिकवादी परिवेश में चाहे स्वदेश हो या पाश्चात्य देश, यह आम बात है कि बच्चों का अपने परिवार तथा सदस्यों के प्रति, खासकर बुजुर्गों के प्रति लगाव एवं सम्मान का भाव, दिन-प्रति-दिन कम होता जा रहा है। ऐसे में ये बालोपयोगी एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ बच्चों के वर्त्तमान और भविष्य को सँवारने में एक सशक्त माध्यम सिद्ध होती है।

हमारा मानना है, कि बच्चों के चरित्र निर्माण में परिवार एवं समाज की बहुत बड़ी भूमिका होती है। यह परिवेश उनकी सबसे बड़ी पाठशाला है। बालमन कोमल एवं नाजुक होने के साथ कोरा या रिक्त भी होता है। ऐसे में सही मार्गदर्शन एवं संस्कार के अभाव में बच्चे राह से भटक जाते हैं। आज के बच्चों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों वो अपनी उम्र से काफी बड़े हो गए हैं। उनका कोमल मन, मनमोहक व्यवहार और आदर्श कहीं खो गया है।

ऐसे में बालमन के चितेरे कथाकार प्रेमचंद ने अपनी बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानियों के माध्यम से बच्चों के आदर्श चरित्र को उभारकर समाज को सार्थक संदेश दिया है। बालकों में यह विवेक विकसित किया जाना चाहिए कि वे हर एक काम के गुण-दोष को समझ सकें।

अंततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि मात्र कहानियों के माध्यम से हम बालकों के मनोविज्ञान को पूर्णतः नहीं जान सकते। उनके बालमन के बहुत से स्तर अभी भी अनदेखे और अनजाने हैं, जिसकी जानकारी हासिल करने को मानव-मन सदा ललायित रहेगा।

संदर्भ-स्त्रोत :

संदर्भ ग्रंथ :

नगेन्द्र (2013). हिन्दी साहित्य का इतिहास. नई दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

ओझा, कन्हैया लाल (2013). भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ (भाग-1). कोलकाताः भारतीय भाषा परिषद्।

प्रेमचन्द (2003). मानसरोवर (भाग-1). पटनाः अनुपम प्रकाशन।

प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, दिल्लीः साधना पब्लिकेशन्स, 2008

भारद्वाज, शिव प्रसाद. प्रतिनिधि कहानियाँ

मार्कण्डेय. प्रतिनिधि कहानियाँ

गुप्त, सियारामशरण. प्रतिनिधि कहानियाँ

कुमार, जैनेन्द्र. प्रतिनिधि कहानियाँ

मेहता, प्रयागराज. प्रतिनिधि कहानियाँ

कोहली, नरेन्द्र. प्रतिनिधि कहानियाँ

अन्य स्रोत :

इंटरनेट (गूगल)

दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ